



ॐ नमः श्रीगुरुपादकल्याणनमः॥ अथ नवग्रहयावलिप्रदानलिखतः॥ ॥
यास्तनस्य अनिष्टाय नयातदा वः आचार्यस्य वलिवियः॥ नथ विविधं व
आदिन वसपः रूढसायाव रुनां॥ ॥ ऊजमानयूषासाजनयावकः॥ चतस्रं
नखलः॥ अद्यादिमांसनकः॥ गुरुनमस्तु नानादिन्यासः कलपाङ्कशूर्ध्वपाणयूजा
गुह्यदि आत्मयूजा मालनीयः॥ ७७॥ यैव वलिदद्यात्॥ सर्वकृतं आवाहनं लिख
व्याप्तिः स्वस्वमुखावधौ॥ अथ ॐ वलिसः॥ ७॥ ॥ ततः मध्यमादिष्टयूज

न॥ द्वादशवक्रयत्तु ध्यानविधि॥ न्यास॥ ॐ कं अमुय रुट् ॥ कलसा धनं ॥ ॐ कं
 निष्कायनमः ॥ ॐ कं अनामिकाय स्वाहा ॥ ॐ कं मध्यामाय वोषट् ॥ ॐ कं तृतीयाय
 यद् ॥ ॐ कं अंगुष्ठाय वषट् ॥ ॐ कं अमुय रुट् ॥ ॐ कं हृदयाय नमः ॥ ॐ कं
 सिनस स्वाहा ॥ ॐ कं निखाय वोषट् ॥ ॐ कं कवचाय दू ॥ ॐ कं नखाय यव
 ट् ॥ ॐ कं अर्धेये रुट् ॥ ॥ इति न्यासः ॥ जायता गायनमः ॥ आध्यात्मिकय
 त्यादि ॥ ॐ कं अस्त्रनायनमः ॥ ध्यान॥ धवरा नूदा नूदं न कव ॥ इति

लावनं ॥ हृजदक मदाता वृत्तमलुलमधर्गं ॥ असास सनालादुकर
 दयु ॥ एकोत्पत्तिनय कानू द्विगुज न क वाससा ॥ इति ध्यानः ॥ प्रियाकलि
 ३॥ षष्ठं ॥ वलि ॥ ॐ कं अं मारु हुरे न वायु प्रकाश सुकिय तायनमः ॥
 वलि ॥ वृषासनायनमः ॥ ध्यानः ॥ पञ्चवर्क चतुर्धा दू वृद्धा च दू तृतीयाय न॥ इति
 लावनमूदानां नागयद्वापवित ॥ ॥ शिखलवा क मालां च पिता क धनु
 नूकर्म ॥ दधतां दधतां कस्तु दधदवज्जदुर्न ॥ गजवर्मा म्बनधर्मा सुनायित

ॐ कं कं कं कं स ॥ अर्धायनमः ॥ ॐ कं कं कं कं कं ॥ इति न्यासः ॥ ॥ ॥

पदीमूर्ध्नि ॥ ॐ तिष्ठान ॥ ॐ ह्रीं ॐ श्वनाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ अग्निपतये नमः ॥ बाल
धतनी ॥ घृतवलि घृतादनस ॥ ॐ ह्रीं आदि त्वाय युवाहि मुखाय ४ कलिगद
सा इवाय ४ रादयदष्टक सफ म्यां जाताय विसोमैत कृणाय कलिजाताय
४ न क व व म य दि न ल्य प गु य नि काय ति मु घु न (१) दाद ह्रीं गु ल य म
नाय आदि सा य ॐ श्वनाय अग्निपत्या विदवताय महा मारु घु रे न वाय य क
स ग कियुता सां गाय स वा द ता य स य नि वा रा य सार्ल का लाय ॐ दं घृतादनव

लिने वद्य पूजां गृह २ अ व त न २ सर्व सां नि कू २ अ मू क न द २ स्वादा ॥ ॥ ॥ कूं ३
नू धु प घृ ता द न ने व द्य जा य ॐ स्वादा ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्वनाय २ ॥ १० ॥ ॐ १० ॥ ॐ
ॐ १० ॥ १० ॥ सा ॥ न क व लु म हा तं जं न क य द्य सू धा न ॥ १ ॥ स क ॥ ॐ श्वनाय
नू रं श्रु नार्ज न सा म्य ॥ ॥ नि वं नि व क र्वा नं त्या दि ॥ क नि क नू र क ता र्थ त्या दि ॥
अ मृ ग न्या दि ॥ ॐ दं य म ना ग न त्त स व द्दि ॥ १ ॥ वा क्त न स द ॥ ॐ ति आ दि
स य पू जा ॥ १ ॥ अग्नि कान्त स सा म पू ज नं ॥ दं स नू ॥ स्व त ति ल ॥ न्या स ॥ यं मृ द्वा य रु

ॐ ॥ कलसाधनं ॥ यां कनिष्ठकायनमः ॥ यां अनामिकायस्वाहा ॥ यै मध्यमायवोषट्
॥ यां तर्जनीयवषट् ॥ यां अंगुष्ठायवषट् ॥ ये कनकयष्टायरुट् ॥ ॥ चर्वकमन
अर्गन्यासकत्वा ॥ श्री धर्मिवाताय ॥ आरात्रकयष्टादि ॥ ॐ स्वां हं सासस्तायन
मः ॥ ॥ स्वतस्वर्गावल्लयलो ॥ दक्षस्वस्वतस्वर्ग ॥ गदायानिद्विबाहुश्च करु
चावनदहा ॥ ॐ यां यै यूं यौ सः सामायनमः ॥ ॐ सां सौ सुं मुं सां मुं सुं सामायने
मः ॥ ध्वनीवलि ॥ ॥ वृषासनायनमः ॥ ॐ शुद्धसूटिकसैकांशं ध्वनीवलि

यदमोलि नं । वनदाहयधनंदवं मूडामालाधनंदवं ॥ जवं धामामहादवं ॐ स्वकाम
धसिदय ॥ ॐ हं सं ८ मूर्च्छायाय अमृतिस्वनाय नमः ॥ ॐ हं अमृतिस्वनाय नमः ॥
दिनाय नमः ॥ सां आययया विदवताय ॥ वलि ॥ कीनजासवलिविय ॥ ॐ सां सां सां
८ सामाय दक्षिण रिमुखाय ८ कीनसमूडा रुवाय ८ साय ककुबु चतुर्दश्यां जाताय
कर्तिक नक्षत्राय अर्गं गताय वैष्णवाय विष्णुलाभाय आग्नेयसिंहाय अ
र्धचंद्राय स्वतवर्षाय गोतमय वीसामुद्रवता गायत्रीं चतुर्विं

ॐ शुभेयमाताय सा मा य उ मा य आ य य त्या वि द व ता य ॐ दंकी नने व द्यी व लि
पूजां गुरु श्रुवा न र स र्वे सां तिं कुरु श्रु मु क न क र स्वा हा ॥ ॥ का ० य ल धू य द
य न व श ॥ जा य ॥ यो यो यं स्वा हा ॥ १० ॥ स्मा १० ॥ ॐ हूं स ४१० ॥ का ० ॥ अ मृ ता सु म हा
त र्जं यु धु ॥ नी क क ना ध र्ज ॥ द सा स न धि र्ज ॥ द र्ज न मा मि म न र्ज न ॥ हृ द्वा ॥ न र्ज
व य सा द त्या दि ॥ अ नु गं धा दि ॥ न र्ज ॥ न र्ज न द क्षि ण ॥ अ नु गं धा दि ॥ वा
क न स र्ज ॥ २ ॥ ध र्ज सा म पू ज ॥ ॥ द क्षि ण अं ग ल यू र्ज न र्ज सि नू य का ॥ नृ

स ॥ ॐ अं गु य र्ज ॥ क ल सा ध र्ज ॥ कां क नि ष का य न म ॥ कां अ ना मि का य स्वा हा ॥
कुं म र्ज सा य वी र्ज ॥ क र्ज न्या य व र्ज ॥ कां अं गु य र्ज ॥ कं अं गु य र्ज ॥
॥ ॥ ध र्ज य का न र्ज ॥ अं ग न्या र्ज ॥ ॥ ॐ कां गु य र्ज ॥ अं गु य र्ज ॥ ॐ अं गु य र्ज ॥
य त्या दि ॥ ॥ ॐ म र्ज सा य न म ॥ अ न ॥ ॐ न क सा ल्या व ल्प य र्ज ॥ न क र्ज कि ग दा
ध र्ज ॥ व र्ज ॥ ॐ अं गु य र्ज ॥ व र्ज ॥ ॐ अं गु य र्ज ॥ व र्ज ॥ ॐ अं गु य र्ज ॥
॥ ॐ कां कं कं कं कं कं कं ॥ अं गु य र्ज ॥ व लि ॥ म यू रा सा ना य न म ॥ अ न ॥

कू२
कुमारकुं कुमारासं सूर्ययहू पूर्वितेन। दलुं किं वनं नानं निविना जाकी सं
दिनं॥ उं कां कां कुं कां कां ४ कुं मानाय नमः॥ वलि॥ * ॥ आराव न कय नम
॥ ८॥ सुवासनाय नमः॥ ३॥ आत॥ गजवर्क मे कद नं लं वादनं वडुडुं
जटाजुते धनं दं वी वल मखल सुविता॥ पन गू वा द सुचि द दि। न वि
नाजिनं॥ मीठ कंद धनं वाभ नाभे म ज ह्याय वित कं ज वू य द स मा नू रं सर्व न द ल सं
नैये॥ आय ग मु य यू का त्मा नि वि द्यं सर्व क मे शु॥ उं गं गं गूं (गं गं गं ४ गूं) वा कू ल ग

लक्ष्मनाय वाइकी पूजयामि॥ विधा ३॥ खठं ग ३॥ वलि॥ गं गं गूं (गं गं गं ४ गूं) वक्षं ध
नाय स्रत मूखाय गूं वाइकी॥ गं विद्ये न्ध नाय नमः॥ ७०॥ ह्यादि १२॥ वलि॥ ॥ यू
न वलि॥ ७॥ जस॥ ३॥ उं कां कां कां स ४ अं गलाय पण्डि मारि मूखाय ४ अर्व न दं
रुं वाय माय कू वू द न म्मां जाताय यू वी वार न द न्ध नाय गान वाज स्य गं नाय क
शिजाताय धूमक तु नामा गय या मयि गान सिताय शिख ना व रु य न क व
शुय विनू पा क म्पी गाय शि व द व डु ला गु ल य मानाय अं ग नाय कं दाय

॥ पीताम्बलधरं देवं नानाय लज्जत्य तं ॥ वामरागस्त्रितालक्रीदितुर्जं सतवर्त्तु
कं । वनर्ददक्षि । वरुणं वामयदक्ष्यं तथा ॥ एवम् । वामदक्षी । सर्वकामरुत्तय
दं ॥ ॥ ॐ ह्रीं स ८ नानाय लज्जत्य तम ८ ॥ वलि ॥ ॐ विष्णुयत्या विदवताय नमः ॥ ॐ वां वां
वां स ८ वृक्षाय उरु गारि मूखाय मगदुदं ॥ ॐ रुवाय रुगुने कषूदादध्याज
ताय धनस्तनकं गाय अणय गणाय वेध्याजाताय ८० नागय वृक्षाय नदिगस्त्रि
ताय पीतवर्त्तुय वृद्धदवताय धनू रीकृतयवलीडे गुल्यमानाय वृक्षाय नमः

[illegible]

ॐ अनामि कायसादा ॥ ॐ कुं म अमायवो म ॥ ॐ जं तर्क न्यायदू ॥ ॐ जं अं रु
द्वायवम ॥ ॐ जं अं यरु ॥ ॐ वयका नद अं न्यास ॥ ॥ जं द क या गायन
म ॥ अ व न क य सादि ॥ य दा स ना य न म ॥ अ न ॥ कू कू मा रि सु मा वा य सि द
लु वि क म लु ॥ आ का रु या च वी दू लु न म लि व न य दा ॥ ॥ ॐ जं जं जं स ४ वृ ह
स्य त य न म ॥ व लि ॥ ॐ जं जं जं जं जं ४ मूं वृ ह स्य त य न म ॥ व लि ॥ ॐ हं स स न
य न म ॥ ॐ ॐ ॐ व म् (१) न म ॥ व लि ॥ ॐ वृ प लि द व गाय न म ॥ अ क्का जा स व

ति वि य ॥ ॐ जं जं जं स ४ वृ ह स्य त य उ रु र्वा लु लि न द गाय आ नि त स (१) गाय व
म जा त य नि खा मा न य उ रु र्वा दि ग मि ता य य म्नां क त य पी त व लु य म्नां गु ल य मा
ना य य म द नि य पि वृ ह स्य ति द व ता रु म्नां द वृ ह स्य त य व म्नां वृ प ल्या धि
द व ता य सां गाय सु वा द ना य सा यू ध य सा लं का ला य य वा द ना य वृ द व लि
गृ क्क २ ॥ अ व ग २ स व र्णा नि कू नू अ मू क न द २ खा दा ॥ ॥ घृ ता क त धू य दी व ने व
इ जा य ॥ ॐ १० जं जं जं स १० ॥ ॐ क्का ॥ वा च स्य नि म हा दि की या ता च ल वि रु

नमः या इकां यूकामासि ॥ विष्णु ३ ॥ वलिगृह २ स्वाहा ॥ अमुकस्य नाम्न न
अमुकस्य निंकुनूरुदं ३ नमः ॥ उं ऊं ॥ उद्योतकालान्नमदादहनदिकि
निरेव वलिगृह २ स्वाहा ॥ मदिवाल नान्नमः ॥ आन ॥ मदिवसुं कर्ता
यदधुदस्य सयं कर्त्तुं कालवागधनं ददं आयदक्षिणदिग्यति ॥ उं मां मां मां मां
मूर्जमायनमः ॥ वलि ॥ उं यज्जायत्याधिदवतायनम ॥ वलि मासजास ॥ उं यो
वीं सो स ८ निष्ठमायदक्षिणामूर्तिस्वाय ॥ गोवा दद १ ग ३ रुवाय माघधुक्कयू

शुभाष्टांजाताय त्राहिनीनक्राय काष्ठाया गगाय, शूडजातय महातंजा ग्नय
 यन्त्रिम दिगमिताय दीर्घमानय नीलवर्णय यमी जनिष्व नदवता
 गायत्री श्रुद्धसं जनिष्वत्राय ऊमाय यजाय विदवताय सांगाय सवाहनय
 स यत्रिवाय सायुधाय सालं कालाय वृद्धमाया दनवर्लिगुद्ध २ अंवतन २ स
 वसानि कनू २ अमूकनू २ साहा ॥ आवा ३ णिदधुमूडा अलिगु वूय ॥ जाय
 ॥ हुं वां वां वां स ४ १० ॥ मूं १० ॥ मूं १० ॥ अति नूति मूदू ५ म मिखादि ॥ दिवा कन सत

श्रीमान्कायाकयननन।नीलजिनययिदिकी।ऊसुंनोमितिनेधन॥ ॥००॥
 नीलुनेलेलाददकि०॥अगुगंआदिवाकनसद॥ ॥०॥नेमखसंमगलु०॥
 म्वातेविदिस,नाकूयूऊ।न॥न्यास॥ॐंअसुंयसुं॥ॐंआकनिदुकायनम०
 ॥ॐंआनामिकायसादा॥ॐंमअसायवटुषे॥ॐं तऊन्यायदू॥ॐंअंगुक्ष
 यवोषट्॥ॐंअसुंयसुं॥ ॥ॐंवदकावननअंगन्यास॥
 ॥ॐंआवनसकयसादि०॥ॐंनीलसिंहासनायनम०॥अन॥कलोलवदनी

धारा,खद्वयम०नकर्न।नीलसिंहासनसुंनलाकूवसामदावत॥ॐंआंआं
 स०नादवनम०॥ॐंआंआंयुंयुंआंयुं०॥नादवनम०॥वलि॥यतासनाय०अ
 न॥अऊनाडिनिरसुंनवकुंलाकूत॥मानकी।दधुया०॥अतकर्न,काल्प
 पर्ययकं॥॥दक्षकलोलवदनीविगकं॥द्विवाकू॥ॐंवदकावामदाकाल्प
 यमृत्विनासर्न॥ ॥ॐंकाकालायनम०॥वलि॥ॐंसय्ययसाधिय०तयनम०॥
 वलि॥मीसादन॥स॥ॐंआंआं०॥स०नादवनम०॥माहिमूखाय,मनयद०॥इवा

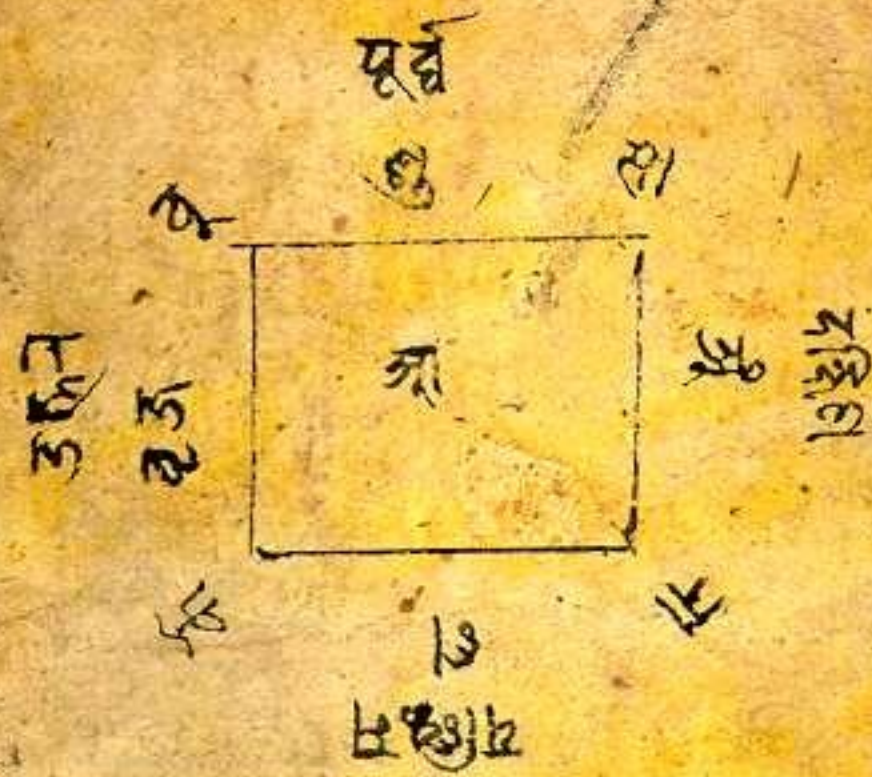
यश्च निष्ठु कृष्णु मास्यं जातय रत नी न कृणाय पाठिन गाय श्रु
 जातय कृतासनाय नामाग्नय नैय ह्यदि गसक्तिताय मकर्नाकृतय कालवर्णु
 य द्वादशां गुल्य माताय * नाद्रुदवता गायत्री श्रुद स नाद वेका नौ य सथय
 ह्याविदवताय सां गाय सवादनाय सयनिवाय सालं कालाय वूं द मां सादनः
 वलिं गृह २ अवतन २ अमुस्य सर्वे सां ति कृन् अमु कदमु कन क २ स्वाहा ॥ मधू
 मधु स्वा ३ सिमधूय मूलन ॥ कृष्ण वर्णु दीय ॥ दीना र्थं वलि विलका वै र्थं हायकः

१ न ३ ॥ अष्टयत् दथीदाव पृलवाधन वाय रूनी ॥ ६ ॥ उर्म्या अष्टयत् रूक ॥

१ का ह आ १ दा ड छ
 १ मा स सा १ धा ण ण
 १ का क क्री १ गाय ना
 १ वा व वू १ डा ड क
 १ जा ड वू १ जा ज ज

90

192154M



माल॥ जायते ॐ श्री गौरी सः ॥ १० ॥ तं ॥ १० ॥ कां ॥ १० ॥ ॥ का ला दी य म हा का र, सि
 रु का न नू स मु र्व ॥ अर्द्ध गं कू म् ॥ व ॥ र्द्ध र्ण न मा मि ना दू दे व ना ॥ ॥ मा ड रु न त
 म ल द क्षि ण ॥ अर्द्ध गं कू म् ॥ वा क न स द ॥ अ न ना दू यू ज ॥ ६ ॥ त ना वा यू
 य स का द्या वा क उ क जा न, याल स वि क स, का ला ट व द ॥ ॥ न्या स ॥ ॐ ॐ अ म्
 य रु ६ ॥ ॐ ॐ क नि ष का य न म ॥ ॐ ॐ अ न मि का य स द ॥ ॐ ॐ म अ मा य वी
 व ६ ॥ ॐ ॐ त कू न्या य दू ॥ ॐ ॐ अ गु द्या य वी व ६ ॥ ॐ ॐ अ म्मा य रु ६ ॥ ॐ ॐ य का

ब्रह्मर्षि ग न्यास ॥ ॐ मूल नर्ग (बाद कया गायन म ४॥ आवाज ही कर्ये ॥ गृध्र सन
म नम ४॥ धू मा सनाय नम ४॥ आ न ॥ धूम्रादि वाद व निस्त्रि ग विना विकृता नन
॥ धू मा सगदा (खेव कठुर्व (म म हा व न ॥ ॐ हूं हूं हूं हूं स ४ कत व न म ४॥ ॐ हूं हूं हूं
हूं हूं हूं ४ हूं कत व न म ४॥ वलि ॥ ॥ पद्मास नाय नम ४॥ आ न ॥ धूम्रादि
म स्य नि नि यै ग यूस का क ध र्ग य उं । द्वि तु ऊं व्यामर्ल न्म नै य मा सन स
सा हि ती वि चि त्त गु र्ग वि च क ल दार्वा ना यो र्ग स म न ॥ ॥ वा वि च गु र्ग य

२॥ ॐ म हा सां त मूर्त्त य धर्म द व ता य न म ४॥ व द्म य त्या धि द व ता य न म ४॥ ध र्म व लि
॥ पु न व लि ॥ ॐ हूं हूं हूं हूं स ४ कत व य ष्ठि मा रि मू खा य धी य व त द (म ह्म रु वा य धा व
वा क्क अ मा वा र्णा जा ता य अ (धू यै गाय उ य मू नि (म गाय बु डायै गे वा य्वा दि ग
मि गाय ख ड्डी क त य वि चि त्त व र्णु य व र्ण गु ल य मा ना य व द्म य वि क ठु द व ता य
हृ सु यु न्द स कत व वि च गु र्ग य व द्म य त्या धि द व ता य र्ग गाय स य वि वा द ना य
सा र्त्त का ना य वू र्द ना ना वि चि त्त द्वा रो द न व लि पू जी गृ ह्म २ अ व त न २ धा र्मि क नू २

अमूक नमः २ स्वाहा ॥ ॥ दशगं धूप कूर्च निमित्ता उदीयते ॥ जायतुं तं तं तं तं स ४ ॥
 १० ॥ स्वां १० ॥ वां १० ॥ गं ॥ अर्द्धं गुणं कार्त्तं स्वर्गं देव विष्णुं । उमीनं गणेशं
 हूतं । नमामि कुरुद वना ॥ नवनले उद्भास्यते ॥ अर्द्धं नमः दिवा कुरुन सद
 ॥ २ ॥ वृद्धस्य निता वृद्धा श्रीगणेश उर्मि वलियाट ॥ अर्द्धं विदिस ॥ उं उं अर्द्ध
 यरु ॥ उं उं उद्भास्यते नमः ॥ उं उं अर्द्धं नमः काय स्वाहा ॥ उं उं अर्द्धं नमः
 मर्द्ध ॥ उं उं अर्द्धं नमः ॥ उं उं अर्द्धं नमः ॥ उं उं अर्द्धं नमः ॥ ॥

[illegible]

स्वायनमः॥ वलिगुरु २ स्वादा॥ अग्निहोत्रवायनमः॥ वलिगुरु २ स्वादा॥
ॐ अहोरात्रकृपा लायनमः॥ अयनाजितादवीयाकीं ३॥ ॐ संकारुहवा
मयाइकीं॥ वलिगुरु २ स्वादा॥ गनुतासनायनमः॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ वां वां वां वां विं
याइकीं॥ विं ३॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ वलि॥ आवाक मूडा संख्यानि॥ ॥ अरुगंधादि॥
॥ ४ ॥ ॥ ततापद्विष्टिमदिगवलियूजनै॥ विदव ३ यामि॥ मकनासनाय
नमः॥ वं वं नू ॐ यनमः॥ वलिगुरु २ स्वादा॥ ॐ कालाकरुनवायनमः॥ वलिगुरु

२ स्वादा॥ ॐ अयनियूनकृपा लायनमः॥ ॐ रूनीदवी नमः॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ उत्तर
रोनवायनमः॥ वलि॥ ॐ मदि वासनायनमः॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ वां वां वां वां विं वां इ
कीं॥ विं ३॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ वलि॥ आवाक मूडा॥ कालमूडाया ३ नि॥ ॥ अरुगंधा
दि॥ ॐ ॥ ॥ ततावायूयवलियूजनै॥ विदव ३ यामि॥ दनिता सनासनायनमः
॥ यं वायूयायेनमवलिंगु २ स्वादा॥ ॐ कयातरोनवायनमः॥ वलिगुरु २ स्वादा
॥ ॐ वनीमहाकृपा लायनमः॥ वलिगुरु २ स्वादा॥ ॐ रूनीदवीयाइकयाइकीं

॥ अं नै कयाली सरै न वाय नमः ॥ वलि गृह २ स्वाहा ॥ अ गजा मनाय नमः ॥ अ यमै रु
वरु मं ॥ न धो नि दाय ली वि द्य पा इ र्पा ॥ वि ५ ३ ॥ य उं ग उ वलि ॥ आ वा अ मू डा लु गु या
नि ॥ ३ ॥ ॥ ग ता उ रु न वलि पू ज य ॥ वि द व ३ या नि ॥ अ स्तो स
नाय नमः ॥ सूं कू वं लाय नमः ॥ वलि गृह २ स्वाहा ॥ अ न क या ल रै न वाय नमः ॥ वलि
गृह २ स्वाहा ॥ अ मा द नी द वी नमः ॥ वलि गृह २ स्वाहा ॥ अ न क म क ० क ग पाल
नमः ॥ वलि गृह २ स्वाहा ॥ अ उं उं सी सरै ले न वाय नमः ॥ वलि गृह २ स्वाहा ॥ अ

हिमवृषहो नवाग्र तमः कलि॥

धनासनायनमः॥ अयं नैलं वै चोद्यो वामूष्ठा विश्वपाइकां॥ लि० ३॥ बडगड
 वलि॥ आवाकमूडा विदूया चूनि॥ १॥ ॥ तता ष्ठी ष्ठनवालि यूजनं॥ लि
 दव३या जिनी॥ वृषासनायनमः॥ कू ष्ठी ष्ठनायनमः॥ वलि॥ गृक २ स्वादा॥ लि
 दविकाटकृष्टालायनमः॥ वलि॥ २ गृक २ स्वादा॥ अ आकर्षनीदवी नमः॥ व
 लि॥ गृक स्वादा॥ अ अं ४ सं दानरुनवायनमः॥ वलि॥ गृक २ स्वादा॥ सिंहासनायन
 मः॥ अ अं ४ सं ले कः॥ ~~मृष्ट~~ धीमदालकी विश्वपाइकां॥ लि० ३ बडगड

लि॥ आवाक मूडा॥ यानि॥ ८ ॥ ॥ तता अथ वलियूजनं॥ त्रिदवश्चानि॥
 गनुतासनायनम॥ अ॥ अतनायनम॥ वलिगुद्र२ स्वाहा॥ ७ अ॥ अर्द्धपीठविकानं
 मू॥ हाटकरोनवायनम॥ वलिगुद्र२ स्वाहा॥ ७ अ॥ कंवटं तं पयं नं अष्टमाह स्वाव
 वलिगुद्र२ स्वाहा॥ ॥ अथ कुन्डमूलमनुनखियांजलि३ आवाक यानि मूडा॥ ८ ॥
 क॥ यययदि॥ वृत्ति अ॥ धवलि॥ ॥ ॥ तता उर्ध्ववलियूजनं॥ त्रिदवश्चानि
 निनी॥ ह॥ सासनायनम॥ उ॥ उ॥ अर्द्धपीठविकानं मू॥ गगलरोनवायनम॥ व॥

तता अथ वलियूजनं॥ २ ता
 लिगुद्र२ स्वाहा॥ ॥ म॥ अ॥ य॥ ०॥ यामूलमनुनकायमाल॥ १०॥ क॥ य॥ का॥ स॥ ध॥ त॥ द॥
 हादिगवलियूजाविधि॥ वृत्ति उ॥ उ॥ वलि॥ ॥ ॥ ॥ तता वलियदानं महा
 वलि॥ यो॥ स॥ ठि॥ या॥ गि॥ नि॥ वलि॥ ॥ अ॥ ज॥ मान॥ खि॥ यो॥ ज॥ लि॥ क॥ य॥ क॥ ग॥ दा॥ स॥ ॥ स्वा॥ क॥ म॥
 हावलि॥ न॥ धू॥ न॥ क॥ धू॥ य॥ जा॥ य॥ म॥ ग॥ य॥ व॥ ॥ वि॥ हा॥ व॥ न॥ अ॥ त्रि॥ द॥ व॥ र्ण॥ ग॥ द॥
 ॥ म॥ र्ण॥ र्ण॥ ॥ अ॥ र्ण॥ या॥ र्ण॥ ॥ का॥ १००॥ वलि॥ स॥ थ॥ व॥ २॥ स॥ म॥ न॥ न॥ जा॥ य॥ ध॥ र्ण॥ १०॥ ॥ त॥ ता॥
 स॥ व॥ र्ण॥ त्रि॥ द॥ व॥ या॥ गि॥ नी॥ यी॥ ठि॥ व॥ ता॥ न॥ य॥ द॥ या॥ १०॥ न॥ क॥ व॥ र्ण॥ म॥ हा॥ त॥ ॥ अ॥ र्ण॥ दि॥ ॥ अ॥ र्ण॥

आदि दि॥ तर्कत॥ ॥ गताया० याय॥ पा० गाययक माला कर्क वलिया
 ८१ अर्थपाण्डयक पूजनशक्यदसवलिरुक्कवलिस॥ ॥ साधसययाया०
 याकर्म याधवळ् इदवतासं वलिविय वलियाठ मालकशुभर्मा अर्थपाण्डु गुनमधु
 लमाल खंडिकु १ घसागदं सर्म ॥ ॥ गदयार्गपासागदुगु र्मा १ धानय दूअनूक
 म नसिनकास्यं ॥ ॥ वूकानकायमाल॥ दक्षिण॥ ॥ कान कर्जवयूव ॥ अक्ष
 यगुं ऊरुं नसावलिधायमनव मर्ककायकं ॥ ॥ सनिसनाययूजनयायः

भूदीयेपजाय साग अत्रिष्टर्म गदयारुकाय॥ दक्षिण॥ ॥ वाक्कलायादाः
 नधूठाव वलिक्काय नवपी० सरुवत॥ पा० यावलिरुक्क दधानस पी० रुवर्ते न मर्क
 क दानकावनक धानस॥ गदकाय॥ नैवद्य विदिदकास्यं म म्याल धूप थव२स
 मर्कम्याल तस्य वायार्कधर्न थव२सदिगसकाय॥ ॥ आदि य वंदायकं सुसिस
 ता॥ २ ॥ सामयकलि॥ कूनसदहनविवनता॥ २ ॥ अंगन य
 थं ददहनविवनता॥ १ ॥ सूक वंथ दन सुसिस ता॥ ६ ॥ गनिधिलयोधदन
 वधर्वक लिक्कनस दसविवनता॥ ४ ॥ दृह सनि यथं द न सुसिस

दहानविवनता ॥ १० ॥ ॥ नाक्षत्रकूलम् दहानविवनता ॥ ११ ॥ कठुर्यकूलिकुनः
सदहानविवनता ॥ १२ ॥ ॥ उर्मवकूलिसूर्यहा यकं क्काय ॥ १३ ॥ सा० सययावलि
॥ १४ ॥ दवता र्ककाय ॥ ॥ १५ ॥ धनवलि क्काय विवि ॥ ॥ १६ ॥ निमवयदवलि विव
या विधान समाक ॥ ॥ १७ ॥ सम्वत् १८ ॥ १९ ॥ वनदिशं सूर्यु मिनि ॥ ॥ २० ॥ लिखित कर्मा
वा र्थ गंग नक्षत्र ॥ ११ ॥ गुरु मसु सर्वदा ॥ ॥

ॐ नमो सिवाय नमो ॥ जयेन् देवो ह



